



मौसमी पशु रोग एवं उनके प्रबंधन पर प्रशिक्षण

दिनांक 1 अगस्त 2026 को ग्राम नैनासर में मौसमी पशु रोग एवं उनके प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में 30 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान श्री श्याम बिहारी, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा गाय, भैंस, बकरी एवं भेड़ में मौसमी परिवर्तन के दौरान होने वाली स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की पहचान, समय पर उपचार तथा रोगों की रोकथाम के उपायों के बारे में जानकारी जानकारी देते हुए विभिन्न रोगों, उनके प्रमुख लक्षणों, रोगों से बचाव तथा उचित प्रबंधन के संबंध में किसानों को प्रशिक्षित किया गया। साथ ही पशुओं के स्वच्छ आवास, संतुलित आहार, स्वच्छ पेयजल, टीकाकरण,

कृमिनाशक दवा के प्रयोग तथा रोगग्रस्त पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखने के महत्व के बारे में किसानों को अवगत कराया गया। किसानों को पशुओं में रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देने पर पशु चिकित्सक से संपर्क करने के लिए भी जागरूक किया गया।

पशु कृमिनाशन शिविर आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 5 अगस्त 2026 को ग्राम उड़सर में गांव स्तर पर पशु कृमिनाशन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 48 पशुपालकों ने भाग लिया तथा कुल 472 भेड़, बकरी एवं गायों का कृमिनाशन किया गया। शिविर में श्री श्याम बिहारी, पशुपालन विशेषज्ञ ने पशुपालकों को पशुओं में आंतरिक परजीवियों की पहचान, रोकथाम एवं नियंत्रण के संबंध में वैज्ञानिक जानकारी जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि कि आंतरिक कृमि पशुओं द्वारा ग्रहण किए गए पोषक तत्वों के अवशोषण को प्रभावित करते हैं, जिससे पशुओं में वजन वृद्धि में कमी, कमजोरी, दूध उत्पादन में कमी तथा मेमनों एवं बछड़ों में वृद्धि एवं विकास प्रभावित हो सकता है। अतः पशुओं की आयु, प्रजाति, स्वास्थ्य स्थिति तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार समुचित समय पर कृमिनाशक औषधियों का प्रयोग करना आवश्यक है। वर्षा ऋतु में नमी एवं तापमान की अनुकूल परिस्थितियों के कारण परजीवियों का प्रकोप बढ़ने की संभावना रहती है। इस दौरान पशुपालकों को पशुओं के आवास की स्वच्छता, सूखा बिछावन, स्वच्छ पेयजल, संतुलित आहार तथा चरागाह एवं पशुशाला की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने तथा पशुओं में दस्त, कमजोरी, भूख में कमी, शरीर का वजन कम होने बालों की गुणवत्ता में गिरावट जैसे लक्षण दिखाई देने पर पशु चिकित्सक से परामर्श लेने के लिए जागरूक किया गया।

नैनो तकनीकी द्वारा मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन विषय पर प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण

दिनांक 12 अगस्त 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र एवं इफको के संयुक्त तत्वाधान में सहकारी समितियों के प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु कृषि विज्ञान केंद्र पर “नैनो तकनीकी द्वारा मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन” विषय पर प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य के वैज्ञानिक प्रबंधन, नवीन उत्पादन तकनीकों, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैव उर्वरकों एवं नैनो तकनीक के प्रभावी प्रयोग के माध्यम से मृदा की उर्वरता एवं कृषि उत्पादन क्षमता को बनाए रखना रहा। कार्यक्रम में श्री पृथ्वीराज सिहाग, राज्य विपणन प्रबंधक, राजस्थान; श्री मदन जी शर्मा, प्रबंध निदेशक, केंद्रीय सहकारी बैंक, चूरू; डॉ. विपिन भादू, कृषि अधिकारी, संयुक्त निदेशक कार्यालय; श्री अजय कुमार जाखड़, क्षेत्रीय अधिकारी, इफको तथा श्री अनिल बिश्रोई, क्षेत्रीय प्रबंधक, इफको उपस्थित रहे तथा उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, सहकारी संस्थाओं की भूमिका, उर्वरकों के संतुलित उपयोग एवं किसानों तक नैनो कृषि तकनीकों को प्रभावी रूप से पहुंचाने के संबंध में



अपने विचार साझा किए। कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हैड , डॉ. विनोद कुमार सैनी ने मृदा स्वास्थ्य को दीर्घकालिक एवं टिकाऊ कृषि उत्पादन का आधार बताते हुए मृदा परीक्षण के आधार पर पोषक तत्वों के प्रबंधन, संतुलित एवं समेकित उर्वरक उपयोग तथा नैनो जैव उर्वरकों के समावेशन पर वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की। मृदा जांच प्रयोगशाला प्रभारी श्री हरीश कुमार रछोइया ने नवीन उत्पादन तकनीकों के साथ जैव उर्वरकों के प्रयोग, नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले सूक्ष्मजीवों, फास्फोरस घुलनशील सूक्ष्मजीवों तथा मृदा जांच आधारित जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों के समन्वित उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



अजोला उत्पादन पर प्रदर्शन आयोजित

दिनांक 13 अगस्त 2026 को ग्राम बीकमसरा में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा पशुपालन इकाई के अंतर्गत अजोला उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण देने के उपरांत 12 प्रदर्शन आयोजित किए गए। श्री श्याम बिहारी, पशुपालन विशेषज्ञ ने पशुपालकों को बताया कि अजोला एक तीव्र गति से बढ़ने वाला जलीय फर्न है, जिसमें प्रोटीन, खनिज तत्व एवं अन्य पोषक तत्व पाए जाते हैं, इसलिए इसे पशुओं के पूरक आहार के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अजोला का नियमित एवं उचित मात्रा में उपयोग पशुओं के आहार में पोषक तत्वों की पूर्ति

करने में सहायक होता है। पशुपालकों को अजोला उत्पादन हेतु उचित स्थान का चयन, गढ़े या टैंक की तैयारी, पानी की मात्रा, मिट्टी एवं जैविक खाद का प्रयोग, अजोला कल्चर डालने की विधि, नियमित कटाई, साफ पानी से धुलाई, पशुओं को खिलाने की उचित मात्रा तथा ताजे अजोला के सुरक्षित उपयोग तथा तापमान एवं नमी के उचित प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षित किया गया। साथ ही अजोला की तेज वृद्धि के लिए आवश्यक परिस्थितियों एवं नियमित देखरेख के संबंध में जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त पशुपालकों को बताया गया कि अजोला को संतुलित पशु आहार के एक घटक के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए तथा पशुओं की प्रजाति, आयु एवं उत्पादन अवस्था के अनुसार आहार का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

स्वयं सहायता समूह बैठक का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर एवं राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) के संयुक्त तत्वाधान में गांव बरलाजसर में दिनांक 14 अगस्त 2026 को एक समूह बैठक (group meeting) का आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को स्वरोजगार, उद्यमिता एवं व्यवसायिक गतिविधियों से जोड़ना तथा आय सृजन के नए अवसरों के संबंध में वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी प्रदान करना था। बैठक में महिलाओं के साथ व्यवसाय प्रारंभ करने की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए जिला उद्योग केंद्र की योजनाओं, ऋण सुविधाओं, स्वरोजगार हेतु उपलब्ध अवसरों तथा छोटे स्तर पर उद्यम प्रारंभ करने की प्रक्रिया के संबंध में जानकारी साझा की गई। साथ ही महिलाओं को कृषि विज्ञान केंद्र से प्राप्त किए जा सकने वाले विभिन्न कौशल एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षणों (केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) उत्पादन इकाई एवं अजोला उत्पादन इकाई स्थापित करने) के बारे में अवगत कराया गया।



बैठक में डॉ. रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ, गृह विज्ञान, द्वारा महिलाओं को खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, कौशल प्रशिक्षण एवं महिला उद्यमिता से संबंधित विभिन्न संभावनाओं की जानकारी देते हुए प्रसंस्करण के माध्यम से व्यवसाय विकसित करने के लिए भी प्रेरित किया गया। इस क्रम में करौंदा एवं लसोड़े के अचार, करौंदा के अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद तथा बाजरे से तैयार किए जाने वाले विभिन्न खाद्य उत्पाद, जैसे बाजरे के बिस्कुट, बाजरे का केक आदि के उत्पादन, पैकेजिंग एवं विपणन की संभावनाओं पर चर्चा की गई। महिलाओं को समूह स्तर पर उत्पाद तैयार कर ब्रांडिंग, पैकेजिंग एवं स्थानीय बाजार से जोड़कर व्यवसाय को विकसित करने की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। बैठक में एरिया क्लस्टर कोऑर्डिनेटर (राजीविका), कृषि विभाग, पशुपालन विभाग के प्रतिनिधि, स्वयं सहायता समूह की पोषण सखी एवं अन्य महिलाओं ने सहभागिता की तथा समूह स्तर पर व्यवसायिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए अपने विचार साझा किए।



केंद्र द्वारा स्थापित प्रदर्शनों का विशेषज्ञों द्वारा फील्ड अवलोकन

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना (SCSP) वर्ष 2026-27 खरीफ के अंतर्गत ग्राम बरलाजसर में स्थापित विभिन्न फसल एवं पशुपालन आधारित प्रदर्शनों की प्रगति का वैज्ञानिक मूल्यांकन करने, किसानों की समस्याओं की पहचान तथा प्रदर्शन तकनीकों के प्रभाव एवं उपयोगिता के संबंध में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से विशेषज्ञों द्वारा फील्ड अवलोकन किया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन विशेषज्ञ श्री श्याम बिहारी, सस्य विज्ञान विशेषज्ञ श्री हरीश कुमार, तथा गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा द्वारा किसानों एवं महिलाओं से प्रत्यक्ष संवाद

स्थापित कर सभी प्रदर्शनों का निरीक्षण एवं तकनीकी मूल्यांकन किया गया। विशेषज्ञों द्वारा किसानों से संवाद कर खेत स्तर पर मूंग एवं ग्वार फसल की वृद्धि एवं विकास अवस्था, पौधों की स्थिति तथा कीट एवं रोग प्रकोप की स्थिति का निरीक्षण कर यह जानकारी प्राप्त की गई कि प्रदर्शन में अपनाई गई तकनीकों उनके खेतों में किस प्रकार प्रभावी रही हैं तथा उन्हें उत्पादन के दौरान किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। पशुपालन आधारित प्रदर्शनों, जैसे अजोला इकाई, टीट डिप कप, मिक्सचर आदि, का भी अवलोकन कर इन तकनीकों के उपयोग, उनकी उपयोगिता एवं पशुपालन में प्राप्त लाभों के संबंध में जानकारी ली गई तथा आवश्यक तकनीकी सुझाव प्रदान किए गए। महिलाओं से पोषाहार वाटिका में लगाए गए पौधों, उनके रख-रखाव, घरेलू पोषण में उपयोगिता तथा प्राप्त होने वाली सब्जियों के संबंध में चर्चा की गई। महिलाओं को पोषण सुरक्षा के साथ-साथ घरेलू स्तर पर विविध एवं संतुलित आहार सुनिश्चित करने के लिए पोषाहार वाटिका के निरंतर रख-रखाव हेतु प्रेरित किया गया।



पशुधन सहायकों (प्रसार कार्यकर्ताओं) हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर में दिनांक 21 अगस्त 2026 को प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु "पशु उत्पादन और प्रबंधन में प्रगति" विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य पशुधन सहायकों की तकनीकी दक्षता एवं क्षमता का विकास करना तथा उन्नत पशुपालन तकनीकों एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी को प्रभावी ढंग से किसानों तक पहुंचाना था। प्रशिक्षण में सरदारशहर ब्लॉक के 50 पशुधन सहायकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण शर्मा, सहायक उपनिदेशक, पशुपालन विभाग, सरदारशहर ने पशुपालन से संबंधित केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।



केंद्र के पशुपालन विशेषज्ञ श्री श्याम बिहारी ने पशुओं के संतुलित खान-पान एवं आहार प्रबंधन, अजोला उत्पादन एवं पशु आहार के रूप में अजोला के उपयोग, नेपियर घास की खेती एवं पशुओं को खिलाने, तथा चारे के रूप में सहजन (मोरिंगा) की खेती एवं पशुओं में इसके उपयोग और लाभ के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. प्यारे लाल (पशु चिकित्सक) ने पशुओं को विभिन्न रोगों से मुक्त रखने तथा पशु स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी तथा डॉ. गुंजन (पशु

चिकित्सक) ने पशुपालन से संबंधित पोषण, प्रबंधन एवं उन्नत पशुपालन तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान श्री हरफूल सहारण, कार्यक्रम सहायक द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न गतिविधियों एवं प्रदर्शन इकाइयों का भ्रमण करवाकर केंद्र पर संचालित पशुपालन, कृषि एवं अन्य तकनीकी गतिविधियों से अवगत कराया गया।



वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीक के प्रदर्शन कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा NICRA (जलवायु समुत्पन्नशील कृषि में राष्ट्रीय नवाचार) परियोजना के अंतर्गत 24 अगस्त 2026 को नैनासर गांव में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन तकनीक के पांच प्रदर्शन आयोजित किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को जलवायु-अनुकूल, संसाधन-कुशल एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों से जोड़ना तथा कृषि एवं पशुपालन से उत्पन्न जैविक अवशेषों के वैज्ञानिक प्रबंधन को बढ़ावा

देना था। कार्यक्रम में डॉ. अजय कुमावत ने बताया कि वर्मी कम्पोस्ट तकनीक कृषि अवशेषों एवं पशु अपशिष्टों को उपयोगी जैविक संसाधन में परिवर्तित करने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों पर आंशिक निर्भरता कम करने, मृदा जैविक कार्बन एवं सूक्ष्मजीवी गतिविधियों को बढ़ाने तथा दीर्घकाल में मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने में उपयोगी है एवं फसल अवशेष, पशु अपशिष्ट, अन्य जैविक पदार्थों का नियंत्रित जैव-अपघटन कर उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद तैयार की जा सकती है।

प्रदर्शन के दौरान किसानों को वर्मी कम्पोस्ट बेड की वैज्ञानिक स्थापना, उपयुक्त जैविक पदार्थों के चयन एवं पूर्व-प्रसंस्करण, केंचुआ प्रजातियों के उपयोग, बेड में उचित नमी एवं तापमान प्रबंधन, वायुसंचार तथा तैयार वर्मी कम्पोस्ट की पहचान एवं कृषि उपयोग की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के प्रति कृषि प्रणालियों की अनुकूलन क्षमता बढ़ाने, जैविक अपशिष्टों के पुनर्चक्रण तथा स्थानीय स्तर पर पोषक तत्वों के पुनः उपयोग को प्रोत्साहित किया गया।



महिलाओं में पोषण प्रबंधन हेतु बहु-अनाज आटा आधारित ऑन-फार्म परीक्षण

महिलाओं में पोषण संबंधी असंतुलन, विशेष रूप से प्रोटीन, आयरन, रेशा तथा अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की अपर्याप्त उपलब्धता, महिलाओं में कमजोरी, थकान, कार्यक्षमता में कमी तथा शरीर की सामान्य पोषण स्थिति को प्रभावित करती है। दैनिक आहार में केवल एक प्रकार के अनाज पर अधिक निर्भरता

रहने से आहार में आवश्यक सभी पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए महिलाओं में पोषण प्रबंधन एवं संतुलित आहार को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा अनुशंसित बहु-अनाज आटे के उपयोग पर ऑन-फार्म परीक्षण गृह विज्ञान विषय विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा के निर्देशन में चयनित 10 महिलाओं पर किया जा रहा है। परीक्षण में अनाज वर्ग (गेहूं, जौ) एवं दलहन वर्ग (मूंग, मोठ, चने) का अनुपात 3:1 रखा गया है। इन खाद्य पदार्थों के संयोजन से आहार में ऊर्जा के साथ-साथ प्रोटीन, आहार रेशा, खनिज तत्व एवं विभिन्न पोषक तत्वों का समावेश किया गया। परीक्षण अवधि के दौरान प्रतिभागी महिलाओं के आहार एवं पोषण संबंधी मापदंडों में होने वाले परिवर्तनों का परिणामों का आँकलन करके प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया जावेगा।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री हरीश कुमार रछोइया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) श्री श्याम बिहारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन) डॉ अजय कुमावत, विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी) डॉ प्रवीन, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी)	डॉ रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) Designed Sunil Kumar V V (Jr. Steno)	डॉ वी के सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर चुरु -1